अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

# शिरोमणि संत रविदास जी का काव्य - संगीतात्मकता से ओत-प्रोत काव्य

**बलवान सिंह[1], डॉ. अजयपाल सिंह[2]**

[1]शोधार्थी, देश भगत विश्वविद्यालय मंडी गोबिन्दगढ़, पंजाब
[2]शोध निर्देशक, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय मंडी गोबिन्दगढ़, पंजाब

**सारांश**

**भक्तिकाल के शिरोमणि संत एवं श्रेष्ठ कवि गुरु रविदास की सारी वाणी गेय है और अनेक रागों से ओत-प्रोत है। वाणी के रागों को समझने से पहले राग के अर्थों को जानना ज़रुरी है। 'राग' का शाब्दिक अर्थ है – 'मनोवैज्ञानिक रूप से रंग जाना'। राग के माध्यम से हृदय की भावनाओं, खुशी-गमी के भीतरी द्रव्य भाव को समझा जा सकता है। मन की विह्वलता, हृदय की पुकार, संगीत द्वारा ही साकार होती है। काव्य और संगीत का अटूट संबंध होता है।**

**मूल शब्द:** "डॉ. मनमोहन गौतम के अनुसार – चाहे कविता शब्द और अर्थ की साधना है परंतु शुरू से ही इसका सुर और लय का रिश्ता है।"[1]

"ऐडगर ऐलन के अनुसार जब संगीत का सुंदर कल्पना से मेल होता है तो कविता बन जाती है। संगीत के बिना भाव-कल्पना केवल गद्य होती है।"[2]

संगीतात्मकता कविता का अनिवार्य अंग है। भक्ति काव्य का संगीत और रागों से गहरा संबंध है। साधक दिल की प्रेम भावना को प्रभु तक पहुंचाने के लिए दिल की गहराई से पुकार करता है। सच्चे मन से उसकी महिमा गाता है। हृदय की वेदना, पुकार, आरती और अरदास से मन रूपी वीणा की तारें झंकारती हैं, कंपन पैदा होती है, आवेश की झुंझुनाहट में जब संगीत-राग की ध्वनियों की कंपन जब मिल जाती है तो भावना का प्रवाह इतना तीव्र हो जाता है कि प्रभु को करुणानिधि बनकर अपने साधक को मिलने के लिए विवश कर देता है। राग में से ही नाद उत्पन्न होता है।

गुरु रविदास जी दलित वर्ग में से थे। कार्य के साथ-साथ ध्यान प्रभु-चरणों में लगा रहता था और उसकी महिमा में मन गुनगुनाता था जिससे वे प्रभु रंग में रंग जाते।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

राग प्राचीन कला है जिसका आरंभ ऋषि नारद से माना जाता है । ऐतिहासिक रूप से रागों का संबंध विभिन्न कबीलों के लोक-रागों से माना जाता है । संगीत संबंधी चार मत हैं – शिव मत, भरत मत, हनुमंत मत, और श्री कृष्ण मत । हनुमंत मत के अनुसार प्रारम्भिक छह राग हैं – सिरी, भैरव, मेघ, दीपक, मालकोस और हिंडोल । कुछ रागों का संबंध ऋतुओं से माना जाता है । जैसे राग बसंत, तिलंग, सारंग, मलार वडहंस और सोरठि आदि । इसी तरह रागों का संबंध समय से भी है । अलग-अलग समय पर अलग-अलग राग गाया जाता है ।

जहां बाहरी संगीत आहत से पैदा होता है, वहाँ तुरिया अवस्था में पैदा हुआ संगीत अनाहत संगीत है जो बिना किसी आहत से उत्पन्न होता है । गुरु रविदास जी ने उच्चतम अवस्था में प्राप्त अनहद नाद का वाणी में उल्लेख किया है –

"गगन मण्डल में आरती कीजै, नाद बिन्द इक मेक करीजै ।
सहस कंवल सिंघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ॥"[3]

गुरु रविदास जी का राग अनंत और आनंद स्वरूप हो जाता है । आप ने असीम भावों को रागों के द्वारा उतेजित कर व्यापक रूप में प्रकट किया है । श्री गुरु ग्रंथ साहब में लिखित रविदास जी की वाणी 16 रागों में है – सिरी राग, राग गउड़ी, राग आसा, गुजरी, सोरठि, धनासरी, जैतासरी, राग सूही, बिलाबल, राग गौढ, राग रामकली, राग मारू, राग केदारा, भैरउ, बसंत, मलार । इसके अतिरिक्त वाणी अन्य रागों में लिखी गई है – राग कानड़ा, राग सारंग, राग कल्याण, राग टोडी, राग खट । राग आसा, राग गउड़ी और राग सोरठि गुरु जी के प्रिय राग हैं।

**राग सिरी**

यह प्राचीन काल का राग है । यह राग मुख्य रागों में से एक है । गुरु अमरदास जी ने कहा है – "राग बिचि सिरी रागु है, जे सचि धरे पियारू । सदा हरि सचु मन वसै निहचल मति अपारु ॥"[4]

इस राग के महत्व के कारण इसे रागों का बादशाह भी कहा जाता है । यह राग धन-संपत्ति से संबन्धित होता है लेकिन संतों की संपत्ति प्रभु नाम है । अत: रविदास जी प्रभु के आगे सर्वव्यापकता को समझाने की बात करते हुए कहते हैं –

"सरीरु अराधै मो कउ बीचारु देहु ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥"[5]
प्रभु प्रेम की चर्म सीमा को दृष्टिगोचर करते हुए प्रभु को कहते हैं –
"तुम जो नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभु ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥"[6]
इस प्रकार सिरी राग में रविदास जी ने ईश्वर रूपी धन संबंधी वाणी रची है ।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

**राग गउड़ी**

गंभीर विषयों को प्रकट करने के लिए राग गउड़ी का प्रयोग किया जाता है । यह राग सभी मौसमों में संध्या के समय गाया जाता है । निर्गुण भक्ति मार्ग की गंभीरता को प्रकट करते हुए रविदास जी लिखते हैं –

"घट अवघट डूगर घणा, इकु निरगुण बैल हमार ।
रमईए सिउ इक बेनती, मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥"[7]
नए समाज का माडल प्रस्तुत करते हुए रविदास जी ने लिखा है –
"बेगमपुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोह नहीं तीही ठाउ ॥
ना तसवीस खिराजु ना मालु ॥ खउफ न खता न तरस जवालु ॥"[8]

परमानंद की अवस्था कैसे प्राप्त करें, मन को पवित्र कैसे बनाया जाए, प्रभु चरणों से सदीवी रिश्ता कैसे जोड़ा जाए ? आदि गहरे विषय इस राग में प्रस्तुत करते हुए गुरु रविदास जी लिखते हैं –

"जोगीसर पावहि नहीं, तुअ गुण कथन अपार ॥
प्रेम भगति कै कारनै कहु रविदास चमार ॥"[9]

**राग आसा**

राग आसा भारतीय राग है जो अमृत बेले और सूर्यास्त के समय गाया जाता है । इस राग के माध्यम से आशावादी दृष्टिकोण उजागर होता है । इस राग में रची वाणी भक्ति भाव से ओत-प्रोत होती है । यह गुरु रविदास जी का प्रिय राग है । आप जी ने गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज 40 शबदों में से छह शबद राग आसा में दर्ज हैं । गुरु जी के अनुसार भले ही मानव पाँच विकारों से ग्रस्त है लेकिन उसे उदास होने की आवश्यकता नहीं है । मानव को विकारों को त्याग कर गुरु ज्ञान का सहारा लेना चाहिए । ज्ञान सभी तपों से उत्तम है –

"जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥
काल फास अबध लागै कछु न चलै उपाइ ॥
रविदास दास, उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥
भगत जन भै हरन, परमानंद करहु निदानु ॥"[10]

आशावादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए रविदास जी कहते हैं कि संत और प्रभु में कोई अंतर नहीं होता –

"रविदास भनै जो जानै सो जानु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥"[11]
"सति संगति मिलि रहीऐ माधउ, जैसे मधुप मखीरा ॥"[12]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

माया में फसा मानव सुख-दुख के परिवर्तन से दुखी हो जाता है । परंतु प्रभु चरणों में से नाम-रस पीकर वह निराश नहीं होता क्योंकि उसे सभी सुखों का ख़जाना मिल जाता है –

"प्रेम की जेवरी बांधिउ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥"[13]

प्रभु के नाम से जुड़ कर मानव संसार रूपी भवसागर से पार हो जाता है । गुरु जी के अनुसार राम-नाम ही सब रोगों का इलाज है –

"हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥ इउ गुर परसादिनरक नहीं जाता ॥"[14]
राग आसा का विषय कल्याणकारी है । इस में मनुष्य को विकारों को छोड़ कर सही रास्ते पर चलने के लिए कहा है –

"माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै सुनै बोले दउरिउ फिरतु है ॥
जब कछु पावे तब गरबु करतु है ॥
माया गई तब रोवनु लगतु है ॥
मन बच करम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसी गइआ जइ कहूँ समाना ॥
कहि रविदास बाजी जागु भाई ॥
बाजीगरु सउ मोहि प्रीत बनि आई ॥"[15]

**राग गुजरी**

गुजर राग गुजर लोगों की रागिनी है । यह सुबह के समय गाई जाती है । शुरू में यह राग गुजरात में उस समय गया जाता था जब वे कृष्ण की पूजा करते थे । गुरु रविदास जी ने सच्ची पूजा सामग्री से प्रभु की पूजा करने के लिए कहा और परंपरावादी पूजा सामग्री को अपवित्र बताते हिए कहा –

"दूधु त बछरै ठनहु बिटारिउ ॥
फूलु भवरि जलु मीन बिगारिउ ॥
तन मनु अरपउ पूज चरावउ ॥
गुर परसादि निरंजन पावउ ॥" [16]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

यहाँ रविदास जी ने सगुण के स्थान पर निर्गुण भक्ति का संदेश दिया है । ऐसा ही संदेश श्री कृष्ण ने उद्धव के द्वारा राधा के लिए भेजा था । इस तरह इस शबद का संबंध गुजरी राग से प्रमाणित हो जाता है ।

**राग सोरठि**

राग सोरठि मेघ की रागिनी है जो शीत ऋतु में रात को गई जाती है । राग सोरठि रविदास जी का प्रिय राग है । गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज उनके सात शबद इस राग में हैं । आप जी ने दो विचारों को प्रकट किया है । पहले में मछली की उदाहरण से प्यार की तीब्रता को दर्शाया है । दूसरा सच्ची प्रीत को दर्शाने के लिए मेघ और मोर, चाँद और चकोर की उपमा देकर सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है –

"मीनु पकरि फांकिउ अरु काटिउ राधि कीउ बहु बानी ॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो तउ न बिसारिउ पानी ॥"[17]
"जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥"[18]

रविदास जी ने लोगों को भ्रम, अज्ञानता से बाहर निकल कर प्रभु की सर्वव्यापकता को समझने का संदेश देते हुए कहा –

"माधवे क्या कहीऐ भ्रम ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥
नरपति एकू सिंघासनि सोइआ, सुपने भइआ भिखारी ॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ, सो गति भई हमारी ॥"[19]

कुछ लोगों ने धर्म को अपनी निजी जायदाद समझ रखा था । रविदास जी उन्हें समझाते हुए कहते हैं –

"आपण बापै नहीं किसी को , भवन को हरि राजा ॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिउ, भागती नहीं संतापा ॥"[20]

अज्ञानता वश मानव अनजान बना रहता है । उसी अंधेरा को बताते हुए रविदास जी कहते हैं –

"जानि अजान भए हम बावर, सोच असोच दिवस जाही ॥
इंद्री सबल, निबलु, बिबेक बुद्धि, परमारथ परवेस नाही ॥"[21]

मोह-माया में फँस कर मानव ईश्वर से दूर हो जाता है –

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

"ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ [22]

मन की भूख ईश्वर के नाम से मिटती है जबकि तन की भूख मिटाने के लिए दिन-रात भजन करना पड़ता है । आत्मा की भूख से अनजान व्यक्ति अंधेरे में रहता है –

"चमरटा गाँठि न जनई ॥ लोग गठावै पनही ॥"[23]
नाम सिमरन से हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है –
"कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरण भै भागी ॥"[24]

**राग धनासरी**

धनासरी वैराग्य की रागिनी है । वैराग्य से ही प्रभु के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है । साधक प्रभु के आगे दर्शन देने की प्रार्थना करता है –

"हम सरि दीनु, दईआलु न तुम सरि,
अब पतिआरू किआ कीजै ॥
बहुत जनम बिछरे थे माधउ,
इहु जनम तुमारे लेखे ॥"[25]

आरती में भी इस राग की विशेषता है । इसमें सच्चे सिमरन और पवित्र वैराग्य का वर्णन करते हुए रविदास जी लिखते हैं –

"नामु तेरी आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे
कहि रविदास नामु तेरी आरती, सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥"[26]

**राग जैतसरी**

इस राग के गाने का समय दिन का चौथा पहर है । गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज केवल एक शबद इस राग में दर्ज है । इस राग के द्वारा रविदास जी ने मन के विकारों को जीतने का संदेश दिया है ।

गुरु जी ने विकारों को जीतने के लिए प्रभु की शरण में जाने के लिए कहा है –

"नाथ कछूआ न जानउ ॥ मन माया के हाथ बिकानउ ॥"[27]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

**राग सूही**

यह दंपति जीवन कि रागिनी है खुशी की रागिनी है और हर मौसम में गाई जाती है । दिन के किसी भी समय इस राग को गा सकते हैं । प्रभु पति है और जीवात्मा पत्नी है । जिसके मन में संसारी मोह नहीं, वह सुहागिन है –

"सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमाणु सुख रलीआं मानै ॥
तन मन देइ न अंतरु राखै आवारा देखि न सुनै अभाखै ॥"[28]

रविदास जी कहते हैं कि पूरा संसार नश्वर है । केवल प्रभु नाम ही अजर-अमर है । वही सच्चा साथी है –

ऊचे मंदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होइ ॥
कहि रविदास सभै जग लुटिआ ॥ हम तउ एक राम कहि छूटिआ ॥"[29]

**राग बिलावल**

यह सम्पूर्ण जाति का राग है । इसके गाने का समय दिन का दूसरा पहर है । आनंद और मंगल के समय गया जाता है । रविदास जी ने बताया है कि जो जीव प्रभु की शरण में चला जाता है उसे किसी चीज़ की कमी नहीं रहती

"जो तेरी सरनागत, तिन नाही भारू ॥"[30]

इस राग के अधीन दूसरे शबद में रविदास जी ने भक्ति करने वाले को सबसे उत्तम एवं श्रेष्ठ बताया है । साधक प्रभु चरणों से जुड़कर अभेद हो जाते हैं –

"जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥

बरण अबरन रंकु नहीं ईसरु, बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥"[31] (राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)

**राग गौड**

इस राग को गाने का समय दुपहर है । मध्य भारत की एक जाति गौड है । अत: इसी कबीले का यह राग माना गया है । गुरु जी ने प्रभु की महिमा का गुणगान किया है और कहा है कि प्रभु सिमरन से संसारी तृष्णाएँ समाप्त हो जातीं हैं –

"मुकंद मुकंद जापाहू संसारू । बिन मुकंद तनु होइ अउ हार ॥
सोइ मुकंद मुक्ति का डाटा । सोइ मुकंद हमरा पित माता ॥"[32]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

दूसरा शबद सामान्य लोगों के कल्याण हेतु प्रस्तुत किया है । गुरु जी कहते कि कोई जीव कितना भी धर्मी हो पर यदि वह निंदा-चुगली करता है तो वह सीधा नरक का भोगी बनता है –

"जे उहु अठसठि तीरथ नावै, जे उहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे उहु कूप तटा देवावै, करै नन्द सभ बिरथा जावै ॥
साध का निंदकु कैसे तरै, सरपर जानहु नरक ही परै ॥"[33]

**राग रामकली**

गुरु रविदास जी के इस राग में दो शबद हैं । एक गुरु ग्रंथ में है और दूसरा अतिरिक्त वाणी से है । गुरु जी के अनुसार अज्ञानतावश मनुष्य स्वयं को ज्ञानी, सूर, कवि आदि समझ बैठता है पर मानव के प्राणों का आधार नाम ही है -

हम बढ़ कबि, कुलीन हम पंडित, हम जोगी सन्यासी ॥
गियानी गुनीसूर हम दाते, इह बुधि कबहि न नासी ॥
कहु रविदास सभै नहीं समझसि, भूल परे जैसे बउरे ॥
मोहि आधारू नामु नाराइन जीवन प्रान धन मेरे ॥"[34]
गुरु जी के नाम के बिना जीवन को अधूरा होता है –
धृग धृग  जीवनु राजे राम बिना
दोहि नैन बिन ,जयूं मीन गहरु जल बिना
कहि रविदास भई  सीतल काया, जयो हों लागो गुर चरना ।"[35]

**राग मारू**

राग मारू युद्ध का राग है और इस में योद्धाओं का वर्णन होता है । जीत पर यह राग गाया जाता है । गुरु रविदास जी के दो शबद गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज हैं । दलित जाति में जन्म लेकर गुरु रविदास जी ने आत्मिक और सामाजिक दोहों क्षेत्रों में उच्चता प्राप्त की -

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा, माथै छत्र धरै ॥
नीचहु ऊच करै मेरा गिबिंद, काहू ते ना डरे ॥"[36]

मानव संसार में रहकर सांसारिक पदार्थों को पाने के लिए संघर्ष करता है । प्रभु सभी पदार्थों का दाता है । प्रभु की शरण में आने वाले जीव की आत्मिक भूख मिट जाती है, सभी डर समाप्त हो जाते हैं – "कहि रविदास उदास दास मति, जनम मरण भै भागी ॥"[37]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

**राग केदारा**

यह राग रात्रि के दूसरे पहर गाया जाता है । गुरु रविदास के अनुसार तीर्थों पर जाकर या कर्मकांडी भक्ति करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती –

खटू करम कुल संजुगत है, हरि भगति हिरदे नाहि ॥"
अजामल पिंगला लुभातु कूंचारु, गए हरि के पास ॥
ऐसे दुरमति निसतरे तूँ किऊँ न तरही रविदास ॥"[38]

**भैरउ राग**

यह सुबह के समय का राग है । गंभीर प्रकृति का राग है । जो जीव सिमरन करके निष्काम भाव से कर्म करता है, उसके मन की दुविधा खत्म हो जाती है –

परचे राम रवै जउ कोई ॥ पारसू परसै दुबिधा न होई ॥
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ, बिन दुआरे त्रिलोक समाइ ॥"[39]

**राग बसंत**

यह बसंत ऋतु का राग है राग के शब्दों में प्रकृति चित्रण और खुशी की अवस्था होती है । संतों की ओट से वास्तविक आनंद की प्राप्ति हो जाती है –

तुझहि सूझन्ता कछु नहीं ॥ फिरावा देखे ऊभि जाही ॥
तू काइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूम्ब राजू तू तीस ते खरी उतावली ॥
साधू की जो लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप शाभ कोटि कोटि ॥"[40]

**मलार वाणी**

मलार वर्षा के राग मेघ की रागिनी है । यह वर्षा के समय गाया जाता है । गुरु रविदास जी के अनुसार जो प्रभु का सिमरन करते हैं, उसे सारी सृष्टि ईश्वरमय लगती है –

हरि जपत तेऊ जना पदम कवालासपति तास समतुल नहीं आनकउ ॥
एक हि एक अनेक होइ बिसथरीउ, आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥"[41]

दूसरे शबद में गुरु रविदास जी कहते हैं कि सत्संगति एक ऐसा स्थान है जहां मन परमानंद की अनुभूति करता है

मिलात पिआरो प्राण नाथु, कवन भगति ते ॥

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

साध संगति पाई परमगते ॥"[42]

हृदय में गुनसार ग्रहण कर पवित्र जीवन प्राप्त करने संबंधी रविदास जी लिखते हैं –

नागर जना मेरी जाति बिखिआत चमारं ॥"[43]

**राग सारंग**

सारंग वर्षा का राग है और दुपहर के समय गाया जाता है । इस में जल के अलंकार द्वारा मानव मन की प्यास को व्यक्त किया गया है –

"जयों बरिखा रूट बूंद उदधि महँ
आई मिलो सोई जल खरों ॥
कह रविदास मोह मद त्यागी ॥
राम चरण मन संत विचारो ॥"[44]

**निष्कर्ष**

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुरु रविदास जी ने जो रागों के अधीन वाणी लिखी है, उसमें रागों के भाव, समय और स्थान का पूरा ध्यान रखा गया है ।

**पाद टिप्पणी**

[1]. डॉ. हरदेव बाहरी, हिन्दी उद्भव, विकास और रूप, पृष्ठ 239
[2]. डॉ. मोहन सिंह, पंजाबी भाषा और छंदबंदी, पृष्ठ 130
[3]. डॉ. सीता राम बाहरी, लेख-रविदास वाणी में पंजाबी प्रयोग, पंजाबी दुनिया, अंक 1971, पन्ना 26)
[4]. उपाध्याय काशीनाथ, गुरु रविदास, राधास्वामी सत्संग ब्यास, 1998, पृष्ठ 59,61
[5]. राग सिरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[6]. राग सिरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[7]. राग गउड़ी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[8]. राग गउड़ी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[9]. राग गउड़ी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[10]. राग आसा, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

[11]. डॉ. बी.पी. शर्मा, संत रविदास वाणी, पद 142
[12]. राग आसा, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[13]. राग आसा, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[14]. राग आसा, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[15]. राग आसा, ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[16]. राग गुजरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[17]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[18]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[19]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[20]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[21]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[22]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[23]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[24]. राग सोरठि, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[25]. राग धनासरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[26]. राग धनासरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[27]. राग जैतसरी, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[28]. राग सूही, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[29]. राग सूही, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[30]. राग बिलावल, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[31]. राग बिलावल, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[32]. राग गौड, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[33]. राग गौड, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[34]. राग रामकली, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[35]. राग रामकली, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[36]. राग मारू, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[37]. राग मारू, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[38]. राग, केदारा, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[39]. राग, भैरउ, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[40]. राग, बसंत, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)
[41]. राग, मलार, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 3, जुलाई - सितम्बर 2025

[42]. प्रो. साहब सिंह, भगत वाणी-2, पृष्ठ 157
[43]. प्रो. साहब सिंह, भगत वाणी-2, पृष्ठ 163
[44]. राग, सारंग, गुरु ग्रंथ साहब (गुरु रविदास वाणी)